प्रेस नोट

62वां दीक्षांत समारोह

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान , जिसे हरित क्रांति की अगुआई में अपने प्रमुख योगदान के लिए पहचाना जाता है। वह अपने सुदृढ़ अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि उत्पादन और उत्पादकता में प्रगति लाने के लिए समर्पित है। संस्थान ने दिनांक 09 फरवरी, 2024 को भारत रत्न श्री सी सुब्रमण्यम हॉल, एनएएससी परिसर, नई दिल्ली में अपना 62वें दीक्षांत समारोह का आयोजन किया। इस समारोह की मुख्य अतिथि भारत की माननीय राष्ट्रपति महामहिम द्रौपदी मुर्मु जी थीं। श्री अर्जुन मुंडा जी, केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री इस कार्यक्रम के सम्मानित अतिथि थे। इस अवसर पर डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव डेयर एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., डॉ. अशोक कुमार सिंह, निदेशक, भा.कृ.अनु.सं., डॉ. अनुपमा सिंह, अधिष्ठाता एवं संयुक्त निदेशक (शिक्षा) भी उपस्थित थे।

- दीक्षांत समारोह के दौरान, माननीय महामहिम राष्ट्रपति द्वारा भा.कृ.अनु.सं. के 6 एम.एससी. और 6 पी.एच.डी. के छात्रों को मेरिट मेडल प्रदान किए गए।
- उन्होंने प्रतिष्ठित भा.कृ.अनु.सं. सर्वश्रेष्ठ छात्र पुरस्कार 2023, नाबार्ड-प्रोफेसर वीएल चोपड़ा गोल्ड मेडल-2023, डॉ. एच.के. जैन मेमोरियल यंग साइंटिस्ट पुरस्कार 2023 पुरस्कारों के विजेताओं को भी सम्मानित किया।

- इस अवसर पर भारत और विभिन्न अन्य देशों के कुल 543 छात्रों, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों के तहत भा.कृ.अनु.सं. में अध्ययन किया है, उन्हें स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट की उपाधियों से सम्मानित किया गया।
- माननीय महामहिम राष्ट्रपति द्वारा खेती और पुष्प की फसलों की विभिन्न किस्मों का विमोचन किया गया। पिछले वर्ष में संस्थान ने कुल 30 उच्च उपज देने वाली किस्मों को विकसित और जारी किया है, जिसमें 25 प्रकार की खेती, 5 सब्जी और फलों की फसलें शामिल हैं।

अपने संबोधन में, माननीय महामहिम राष्ट्रपति ने सभी स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट डिग्री प्राप्तकर्ताओं को बधाई दी एवं अनुसंधान और शिक्षाविदों में संकाय की उत्कृष्टता को स्वीकार किया। उन्होंने तकनीकी प्रगति, फसल उत्पादन में अग्रणी उपलब्धियों और अत्यधिक कुशल मानव संसाधनों के मौजूद होने के साथ-साथ नवीनतम ज्ञान और कौशल से लैस नई पीढ़ी के साथ मिलकर उभरती कृषि से जुड़ी चुनौतियों को संबोधित करने में आत्मविश्वास पैदा करने के माध्यम से वैश्विक मंच पर भारत की कृषि शक्ति को आगे बढ़ाने में भा.कृ.अनु.सं. की भूमिका की सराहना की। उन्होंने भारतीय आबादी के लिए स्थायी खाद्य सुरक्षा, पोषण और आजीविका सुनिश्चित करते हुए कृषि निर्यात आय को बढ़ाने में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। इसके अलावा, संस्थान भारत सरकार के तिलहन और दलहन में आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सक्रिय रूप से प्रयास कर रहा है। उन्होंने कहा कि मेरा गांव मेरा गौरव, स्वैच्छिक पहल और पूसा

समाचार जैसे विभिन्न विस्तार कार्यक्रमों के साथ-साथ किसानों के खेतों में संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा प्रदान की गई प्रत्यक्ष तकनीकी सहायता के माध्यम से जमीनी स्तर के किसानों का समर्थन करने के लिए संस्थान की दृढ़ प्रतिबद्धता के बारे में जानकर खुशी होती है। अपने शोध प्रयासों के साथ-साथ एक वैश्विक विश्वविद्यालय के रूप में विकसित होने की दिशा में संस्थान के समर्पित प्रयासों को देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

भा.कृ.अनु.सं. के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने गेहूं और बासमती धान की किस्मों में संस्थान की प्रगति के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान की। वर्तमान में, भा.कृ.अनु.सं. की गेहूं की किस्में लगभग 9 मिलियन हेक्टेयर में फैली हुई हैं, जो देश के अन्न भंडार में लगभग 40 मिलियन टन गेहूं का योगदान करती हैं। इसके अतिरिक्त, संस्थान की बासमती चावल की किस्मों से हर साल लगभग 25,000 करोड़ रुपये की धनराशि का निर्यात उत्पन्न हो रहा है। उन्होंने निम्नलिखित बिंदुओं पर भी प्रकाश डाला:

- वर्ष 2023 में भा.कृ.अनु.सं. ने पूरे भारत में विभिन्न गेहूं क्षेत्रों के अनुरूप तैयार की गई पांच नई ब्रेड गेहूं की किस्में विकसित की हैं। इनमें से उल्लेखनीय है एमएएस-व्युत्पन्न किस्म, एचडी 3437, जो पत्ती और स्ट्राइप -रसट्स के प्रतिरोध के लिए विशिष्ट हैं, इसके साथ ही एचडी 3386 और एचडी 3388, उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र और उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र में समय पर बोई गई सिंचित स्थितियों के लिए उपयुक्त है। भा.कृ.अनु.सं. बासमती धान की किस्म के विकास में वैश्विक अग्रणी है। संस्थान द्वारा विकसित पूसा बासमती 1121, पूसा बासमती 1718 और पूसा

बासमती 1509 जैसी किस्मों ने भारत में बासमती धान क्षेत्र के 95% से अधिक क्षेत्र में आधिकारिक हैं , जिससे विदेशी मुद्रा आय में महत्वपूर्ण योगदान हो रहा है, जो वर्ष 2023-2024 के दौरान 40,000 करोड़ रुपये है।

- पूसा बासमती 1847, पूसा बासमती 1885 और पूसा बासमती 1886 सहित बासमती चावल की उन्नत किस्मों, जिनमें बैक्टीरियल ब्लाइट और ब्लास्ट रोगों के के प्रति सहिष्णु हैं , से अपेक्षित हैं कि वे कृषि रसायन के उपयोग को कम करते हुए निर्यात राजस्व को और और बढ़ाएँगी।
- भा.कृ.अनु.सं. ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्थानीय सुगंधित लघु अनाजवाले धान की किस्म,"कलानमक" को विकसित किया है और "पूसा नरेंद्र कालानमक 1" किस्म जारी की है, जो इस क्षेत्र में धान की खेती करने वाले किसानों की लाभप्रदता में क्रांतिकारी बदलाव लाएगा।
- 'अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष' 2023 के भाग के रूप में, भा.कृ.अनु.सं. ने आयरन और जिंक से समृद्ध एक बायोफोर्टिफाइड पर्ल मिलेट संकर, पूसा 1801 को जारी किया गाया जिसका उद्देश्य देश भर में पोषण संबंधी कमियों को दूर करना है।
- संस्थान द्वारा दूरदराज के किसानों को कृषि-सलाह प्रदान करने के लिए "पूसा समाचार" नामक एक वीडियो-आधारित विस्तार मॉडल तैयार किया गया है।

अधिष्ठाता और संयुक्त निदेशक (शिक्षा) डॉ. अनुपमा सिंह ने उपस्थितों को बताया कि भा.कृ.अनु.सं. मेगा विश्वविद्यालय के तत्वावधान में विभिन्न भा.कृ.अनु.प. संस्थानों में प्रवेश शुरू हो गए हैं तथा असम, बारामती, बेंगलुरु, भोपाल, कटक, हैदराबाद,

झारखंड, जोधपुर, करनाल, कोलकाता, लखनऊ, नागपुर, पटना, रायपुर, रांची और शिलांग में 16 केंद्रों की स्थापना की गई है। भा.कृ.अनु.सं. की उत्कृष्टता को विश्व स्तर पर स्वीकार किया जाता है, जिसने अफगानिस्तान के कंधार में अफगानिस्तान राष्ट्रीय कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उल्लेखनीय घटनाक्रमों में, दिनांक 03 जुलाई, 2023 को आधुनिक सुविधाओं से लैस अंतर्राष्ट्रीय छात्रावास 'मधुमास' का उद्घाटन शामिल है। हाल ही में 31 जनवरी, 2024 को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री अर्जुन मुंडा ने 500 कमरों वाले गर्ल्स हॉस्टल 'फाल्गुनी' का उद्घाटन किया।